[This question paper contains 2 printed pages.]

Roll Number	**:**	
Unique Paper Code	**:**	**121302301**
Title of the Paper	**:**	**Rigveda, Brihaddevta & Paniniyasiksha**
Name of the Course	**:**	**M.A. Sanskrit Examination, Dec 2024**
Semester	**:**	**III**
Duration	**:**	**3 Hours**
Maximum Marks	**:**	**70**

इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमाङ्क लिखिए।

(Write Your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

टिप्पणीः अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्नपत्र का उत्तर **संस्कृत** या **हिन्दी** या **अंग्रेजी** में से किसी एक भाषा में दीजिए।

Note: Unless otherwise required in a question, answers should be written either in Sanskrit **or** in Hindi **or** in English.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
Attempt all questions.

1. निम्नलिखित मन्त्रों की व्याख्या कीजिए, जिनमें से किसी एक की व्याख्या संस्कृत में हो: 08×03=24

Explain the following Mantras; out of which **one** should be in **Sanskrit**.

(क) वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम्।

गीर्भिर्वरुण सीमहि॥

अथवा/or

व्यंजते दिवो अंतेष्वक्तून्विशो न युक्ता उषसो यतन्ते।

सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू॥

(ख) अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष।

वाश्राइव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः॥

अथवा/or

मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य।

आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

(ग) दिव्या आपो अभि यदेनमायन्दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम्।

गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्गुरत्रा समेति॥

अथवा/or

प्र क्षोदसा धायसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमायसी पूः।

प्रवाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः॥

2. किन्हीं **चार** पर टिप्पणियाँ लिखिए। 05×04=20

Write notes on **any four** of the following:

अरण्यानी, पर्जन्य, मन्त्रों के प्रकार, सूक्तों के प्रकार, नैपातिक देवता, नाम, स्वर, हृदय–स्थानिक

3. ऋग्वेद के 'विश्वे देवाः' सूक्त के महत्व का वर्णन कीजिए। 08

Describe the importance of 'Visve Devah' sukta of Rigveda.

अथवा/or

ऋग्वेद के वरुण–देवता का निरुपण कीजिए।

Describe the Varuna deity of Rigveda.

4. बृहद्देवता के अनुसार अग्नि के त्रिविध रूपों का निरुपण कीजिए। 08

Describe the three forms of Agni according to Brihaddevata.

अथवा/or

आचार्य शौनक के अनुसार केशी का वर्णन कीजिए।

Describe Keshi according to Acharya Shaunak.

5. निम्नलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए । 05×02=10

Explain the following verses:

(क) स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पंचविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥

अथवा/or

गीती शिघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥

(ख) चाषस्तु वदते मात्रां द्विमात्रं त्वेव वायसः।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम्॥

अथवा/or

संवृतं मात्रिकं ज्ञेयं विवृतं तु द्विमात्रिकम्।
घोषा वा संवृताः सर्वे अघोषा विवृताः स्मृताः॥